प्रथम अध्याय :-

'धर्मवीर भारती व्यक्तित्व एवं कृतित्व।'

प्रास्ताविक :–

आधुनिक हिन्दी साहित्य के मौलिक रचनाकारों की सूची में "धर्मवीर भारती" का नाम उल्लेखनीय है । डॉ.धर्मवीर भारतीजीने हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं में सफलता पायी है । उनका नाम "बहुमुखी प्रतिभा" के रचनाकार के रुप में हमारे सम्मुख आता है । उनकी लेखनी जिस विषय एवं विधा पर चलती है – वहाँ भारतीजी का व्यक्तित्व निखर आता है । धर्मवीर भारती आज के जाने–माने कथाकार, कवि, नाटककार, निबन्धकार और पत्रकार है । उनकी लेखनी ने अभितक विराम नही लिया है । धर्मवीर भारतीजीने साहित्य निर्मिती के साथ–साथ मानव कल्याण सम्बन्धी अनेक आन्दोलनों का नेतृत्व किया है भारतीजीने अपनी बाल्यावस्था में दूसरे महायुध्द के प्रलाप का अनुभव किया है । तत्पश्चात उसे अपने साहित्य में गीतिनाट्य विषय बनाया है ।

भारतीजी न केवल साहित्यकार ही है, बल्कि उसके साथ–साथ उन दिनों चले हुए सन 1942 के स्वतंत्रता संग्राम आदोंलन कर्ताओंमें एक है । इसी आदोंलन में सक्रीय सहभाग लेनेसे उनकी पढाई एक साल के लिए रुक गयी थी । धर्मवीर भारतीजी मार्क्सवादी चिंतन के गुढ उपासक है । इस मार्क्सवाद के बारे में स्वयं लेखक कहते है –"मेरी आस्था कभी भी मार्क्सवाद में कम नहीं हुई और न मैने अपनी जनता के दु:ख – दर्द से मुँह फेरा है । धीरे–धीरे अपने दृष्टिकोण में अधिकाधिक सामाजिकता विकसित करने की ओर मै ईमानदारी से उन्मुख रहा हूँ और रहुँगा । और उसी दृष्टि से जहाँ मुझे मार्क्सवादी शब्दजाल के पीछे भी असन्तोष, अहंवाद और गुटबन्दी दीख पड़ी है उसकी ओर साहस से स्पष्ट निर्देश करना मै अनिवार्य समझता हूँ क्योकि ये तत्व हमारे जीवन और हमारी संस्कृति की स्वस्थ प्रगती में खतरे पैदा करते है । मै जानता हूँ कि जो मार्क्सवादी अपने व्यक्तित्व में सामाजिक तथा मार्क्सवाद की पहली शर्त ऑब्जेक्टिवीटी विकसित कर चुके है, वे मेरी बात समझेंगे और इतना मेरे लिए यथेष्ट है ।"[1]

हर एक क्षेत्र में अपना नाम कमानेवाले एवं अपने व्यक्तित्व का प्रभाव दिखानेवाले लेखक धर्मवीर भारतीजीका जीवन परिचय कर लेना मेरे सौभाग्य की बात है ।

धर्मवीर भारती एक सफल साहित्यकार है । इनके कृतित्व को समझने से पूर्व उनके जीवन-वृत्तांत को जानना जरुरी है ।

1. जीवन परिचय

1:1:1 जन्मतिथि एवं जन्मस्थान

डॉ.भारतीजी का जन्म 24 दिसम्बर, 1926 ई. में इलाहाबाद के अंतरसुइया मुहल्ले में हुआ है । यह उनका जन्म क्रिसमस पर्व के दिन हुआ है । इसी वजहसे भारतीजीके बालमनपर ईसा मसीह का प्रभाव दिखायी देता है । (क्रिसमस पर्व के दिन जन्म होनेवाला व्यक्ति बडा हो जायेगा, इसीतरह की जो कल्पना थी, वह आगे सच हो जाती है ।)

वर्तमान धर्मवीर भारती का नाम– "धर्मवीर वर्मा" था । बचपन के समय में उन्हे प्यारसे सभी लोग "बच्चन" कहते थे । स्कूली शिक्षा लेते समय अपने "वर्मा" नाम के आगे भारतीजीने "भारतीय" लगाना प्रारम्भ किया था । यह धर्मवीर की राष्ट्रिय भावना का द्योतक है । यह नाम धीरे–धीरे "भारती" में परिवर्तीत हो जाता है ।

डॉ.पुष्पा वास्कर के अनुसार "भारतीजी का जन्म जिस घर में हुआ, वह आज 428 अंतरसुइया के नामसे जाना जाता है । यह इलाहाबाद की संफरी गली में है । आज यहाँ "सिंह चिकीत्सालय" का बोर्ड लगा है । इस मकान में आर.एस.सिंह रहते है । डॉ.भारतीसे उन्होंने यह मकान खरीदा है । इस गली के अंतीम छोरपर भारती के मामाश्री अभयकृष्ण जौहरी का मकान है ।"[2]

1:1:2 माता–पिता तथा कुल परम्परा

भारतीजी की माता का नाम– चंदादेवी एवं पिता का नाम चिरंजीवलाल वर्मा है । भारतीजी की माता आर्य समाजी थी, उन्होंने अपने पुत्रपर उस समाज के संस्कार डालने का प्रयास अवश्य किया होगा । भारतीजीका "धर्मवीर" नाम उनके माताजीने इसी समाज से प्रभावित होकर ही रखा है । उनका माताजी का मेलों–ढेलोंपर विश्वास नही है । वह इस सन्दर्भ में कहती है कि– "इसी मेलों – ढेलों से देश का नाश हुआ है । अपने पुत्रपर पश्चिमी

संस्कारोंसे बचाने का प्रयास किया है । यह माता का बर्ताव भारतीजी को बिल्कुल पसन्द नही था । आगे भारती द्वारा अपने साहित्य में कही भी अपनी माता का स्मरण दीखायी नही देता है ।

भारती के पिता श्री चिरंजीवलाल वर्मा ने अपनी खेती-बाडी छोडकर रुडकी में ओवरसीयरी की शिक्षा प्राप्त की । उनके पिता अपने पाँच भाईयों में एक होनहार व्यक्ति थे । कुछ दिन बर्मा में भी सरकारी नोकरी और ठेकेदारी की । असके बाद मिर्जापुर और फिर इलाहाबाद आकर स्थायी रुप में वास्तव्य करने लगे । भारतीजीने अपनी छोटी बहन लल्ली को शादी अपने पिता की मृत्यु के बाद करायी ।

डॉ. धर्मवीर भारती की कुल--परम्परा का विस्तृत परिचय तो हमें कही भी प्राप्त नही होता है । सिर्फ एक जगह भारतीजीने अपने बाबा के बारे में संक्षिप्त रुप में जानकारी दी है । अनके बाबा "मलका बिक्टोरिया के समय में एक घर बनवाया था, जिसमें सबसे उपर लिखाया था – "ओम सत्य मेव जयते नानृतम" उसके नीचे लिखाया था – दिल्ली श्वरो वा जगदी श्वरो वा ।"[3]

भारती के पूर्वज (पितामह) शाहजहाँपूर के नजदीक खुदागंज कस्बे के जमींदार थे अपना उदर निर्वाह करने के लिए भारतीजीके पास तीन बडे–बडे मकान थे । एक मकान में स्वयं रहते थे, दो भाडेपर लगाये गए थे । इन तीनों मकानों को भारतीजीने बम्बई जाकर बेच दिया है ।

1:1:3 शिक्षा

भारती की स्कुली शिक्षा डी.ए.वी. हाईस्कुल में प्रारंभ हुई । स्कुली शिक्षा लेते समय अनेक कठीणाईयोंका सामना भारतीजीको करना पडा । इसी हाईस्कूल में भारतीजी आठवी कक्षा में पड रहे थे । इन्ही दिनों उनके पिताजी – चिरंजीवलाल वर्मा का देहांत हुआ । भारतीजी के माथे से पिता का साया हट गया । ऐसी असुविधा जनक परिस्थिति को संभालने का काम उनके मामाश्री अभयकृष्ण जौहरीने किया । वे इलाहाबाद में उसी 428 अंतरसुइया मुहल्ले म रहते थे ।

स्कूली शिक्षा लेते समय हर कक्षा में वे अव्वल, गुणी छात्र थे । उनके गुरु डॉ.रामकुमार वर्मा थे । डॉ.रामकुमार वर्मा के गुणी विद्यार्थियों की एक मालाही बनी है । जिसमें प्रमुख है – डॉ.धर्मवीर भारती, डॉ.जगदीश गुप्त, डॉ.रघुवंश, डॉ.कैशनी प्रसाद चौर सिया, डॉ.राजेंद्रकुमार सभी साहित्यिक है ।"[4]

भारतीजीने स्कूली शिक्षा पुरी करके सन 1945 ई. में बी.ए. की परीक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की । बी.ए. की परीक्षा में सर्वाधिक गुण प्राप्त करने के कारण भारतीजी को "चिंतामणी घोष" पदक प्रदान किया गया । अपनी पढाई का खर्चा चलाने के लिए उन्होने टयुशनों के साथ-साथ "अभ्युदय" नामक दैनिक पत्र की पत्रकारिता को अपनाया एम.ए. पढते समय भारतीने अपना "मुर्दो का गाँव" कहानी संग्रह प्रकाशित किया । डॉ.धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में "सिद्ध साहित्य" पर भारतीजीने शोधकार्य प्रारंभ किया । उसे सन 1950 ई. को पुरा करके पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

1:1:4 परिवार

भारतीजीका पारिवारिक जीवन बडा संघर्षपुर्ण रहा । अपने यौवनावस्था के प्रेम में वे असफल रहे । आगे चलकर यह उनका अतृप्त प्रेम "कान्ता कोहली" नामक पंजाबी युवती के साथ चला । यह लडकी टाईपिस्ट का काम करती थी । पहले-पहले कान्ता कोहली के पिताजी की अनमुती विवाह के लिए नहीं मिली । मात्र आगे चलकर अपनी बेटी के भुख हडताल एवं धर्मवीर के प्रति सच्चा प्रेम देखकर उन्हे संमत्ति देनी ही पडी । विवाह के बात भारतीजीको कान्ता से एक बच्ची हुयी । आगे थोडे ही समय में पति-पत्नी के प्रेम में बाधा आने के कारण इन दोनों के सम्बन्ध में विच्छेद हो गया । कुछ दिनों के बात भारतीजीने अपना दुसरा विवाह पूष्पा शर्मा के साथ किया । उनकी पहली पत्नी की लडकी भारतीजी के पास ही है । उनकी पहली पत्नी ने भी दूसरी शादी की और वह वर्तमान में कांता पंत बनकर जी रही है ।

डॉ.भारतीजीकी दूसरी पत्नी पूष्पा भारती भी एक लेखिका है । उससे भारतीजीको तीन संताने हुयी है । उनका नाम है- पारमिता, किशंकू और प्रज्ञा । इसप्रकार भारतीजीका वैवाहिक जीवन सुखमय नही रहा है ।

डॉ. भारतीजी इलाहाबाद छोडकर स्थायी रुपसे 5 "शाकुन्तक" साहित्य सहवास बांद्रा पुर्व, बम्बई क्र.51 में रहते है ।

1:1:5 व्यक्तित्व : स्वभाव, आचार, व्यवहार अभिरुचि तथा जीवन के प्रति देखनेका दृष्टिकोण

भारतीजी किशोरावस्थासे सुभाषचन्द्र बोस से अत्यधिक प्रभावित है । अपने शोध निर्देशक धीरेंद्र वर्मा के प्रति भी उनमें आदर भावना दिखायी देती है । भारतीजी में भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य का अभुतपूर्व समन्वय देखने को मिलता है । भारतीय साहित्यकारोमें प्रसाद, शरत्, निराला एवं पाश्चातय साहित्यकारोमें शेली, ताल्सतोय एवं आस्कर वाईल्ड के साहित्य का संस्कार उनपर विशेष रुप में दिखायी देते है । इन संस्कारोके साथ-साथ धर्मवीर भारतीका व्यक्तित्व बडा रोचक दिखायी देता है । उनका जीवन संघर्षमय रहा, फिर भी इन परिस्थियों का सामना उनके रोमांटिक व्यक्तित्व ने किया है । उनका व्यक्तित्व जानने के लिऐ डॉ. भारतीजीने लिखी हुयी समस्त रचनाओंका आकलन करना जरुरी है ।

भारतीजी स्वभाव से संकोची और कल्पना प्रिय व्यक्ति है । वे तन. से कमजोर, स्वभावसे रोमांटिक मानव है । उनका मन गहरा है । और बातो में चालबाज भी, वे हंसमुख स्वभाव के है । झूठ को सही बना देना और अधिक सही में बदल देना - इत्यादी में निपुण है । उनका स्वभाव कवि के रुप में चंचल का नमुना दिखायी देता हे, तो दुसरी ओर विचारक के रुप में उतने ही गंभीर है । भारतीजी मधूर स्वभाव के व्यक्ति है । उनका आचरण - व्यवहार बिल्कुल मिलनसार है । कोई भी व्यक्ति मिलने आ जाने पर काम छोडकर बाते करते है । वे सरल हंसमुख तथा विचारवान व्यक्ति है । भारतीजी आस्थावान, प्रतिभावन क्षमतापुर्ण, परिश्रमशील है । उनका नीति और नियम, धर्म तथा संस्कृतिपर विश्वास है । डॉ. भारतीजी जिस समाज - सफरी गली में रहते है, उसके अंग प्रत्यंग से परिचित लगते है । उनमें योग्यता भी है । उनका दिनक्रम नियम से उठना, अध्ययन करना मिलनेवालोसे दिल खोलकर बाते करना उन्हे अच्छा लगता है । वे बालक से लेकर वृध्द तक जिससे भी बाते करते हैं उनसे मिलकर बाते करना उनके स्वभाव की विशेषता है । उनकी स्मरण शक्ति असाधरण है । वे बाते करते वक्त ईर्द गीर्द का वातावरण काव्यमय बना देते हैं ।

अभिरुची :-

भारतीजीमें साहित्यिक अभिरुचि उच्चकोटी की है । उनको पढाई और घुमक्कडी का शौक है । पढाई के संस्कार उनके व्यक्तित्व और लेखनपर अनायास दिखाई देते है । भारतीजी के शब्दों में – दो चीजों की बेहद प्यास है । एक तो नई–नई किताबों की ओर दूसरी अज्ञात दिशाओंको जाती हुई लंबी, निर्जण छायादार सडकोंकी । सुविधा मिले तो जिन्दगी भर धरती की परिक्रमा कर देता जाऊँ ।"[5]

घुमक्कडी के कारण उन्होंने अनेक देश विदेशों की यात्राएँ की है । भारतीजी को फूलों का बेहद शौक है । उन्हे फूलो के रंगो और सौरभ की लहारोंसे प्रेम है । लेखिका चन्द्रकांता वर्मा के अनुसार – "फूलों से भी उन्हे बहुत प्रेम है, विशेषकर बेला एवं रंजनीगंधासे । फुलों के मामले में तो वे कमजोर दीखते है– "अगर मेरा वश चले तो मै एक नया कैलैंडर जारी करूँ" जिसमें दिन रूप्ताह, मास, वर्ष से गिनती न होकर फूलों को बोने, उगने, फूलने और झरने–से महिनों और बरसों की माप किया जाया करे । जहाँ तक रंगो का प्रश्न है, उन्हें नीलेरंग ज्यादा प्यारे एवं अच्छे लगते है । अपने अधिकांश रचनाओं में उन्होने नीलेरंग को ही प्रधानता दी है ।"[6]

भारतीजी को टहलने की बीमारी है, जो उनका उपन्यास "गुनाहों का देवता" का चंदर और एकांकी "नंदी प्यासी थी" का राजेश आदि पात्र इस बीमारी के शिकार हैं । उन्हे सोडा वॉटर पीना अच्छा लगता है । लेखक सोनवणे कहते हैं उनका प्रिय गीत है – "ये रातें, ये मौसम, ये हँसना: इन्हें ना भुलाना, हमें भूल जाना । इसीप्रकार उनकी प्यारी गजल है – "दो गज जमींभी न मिली कूचा–ए–यार ।"[7] भारतीजीको अपने जन्मस्थान एवं इलाहाबाद शहर से बेहद प्यार है ।

उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण स्वच्छ है । उनके जीवन में प्रेम और काम का संघर्ष बहुत तिव्र रहा है । बचपन के समय में ही उनके माता–पिता का देहान्त हुआ है । इसका परिणाम उनके बालमनपर पडता है । उनका जीवन प्रारंभ से ही दु:खमय रहा है । अकसर उनमें अकेले बैठकर इधर–उधर की बाते सोचने की आदत इन परिस्थितियों के कारण पड जाती है ।

उनकी कविताएँ जीवन को आशावाद का संदेश देती है । उनका ज्यादातर साहित्य, असफल प्रेम का चित्रण करता हुआ दीखायी देता है । लेखक अज्ञेयजी धर्मवीरजी की विशेषता लिखते है – "वह केवल अच्छे, परिश्रमी, रोचक लेखक नही है, वह नयी पौंध के सबसे मौलिक लेखक है ।"[8]

1:1:6 नौकरियाँ/जीविकोपार्जन –

जब भारतीजी डी.ए.वी.हाईस्कूल में आठवीं की कक्षा में थे, तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी । उनके मामाश्री अभयकृष्ण जौहरी ने अर्थिक सहायता की । इसीतरह शिक्षा चलती है । बी.ए. होने के बाद अपने पढाई का खर्च चलाने के लिए उन्होंने "टयुशने" साथही "अभुदय" दैनिक पत्र की पत्रकारिता को अपनाया । एम.ए. पढते समय उन्होंने "मुर्दो का गाँव" अपना कहानी संग्रह प्रकाशित किया । इससे मिले हुऐ रुपयोंसे अपनी शिक्षा और जीवनयापन चलाया है ।

डॉ.भारतीजीने अपना पी.एच.डी. का शोधकार्य पूरा किया और उन्हे सन 1950 ई.मे प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक की नौकरी मिल गयी । यह नौकरी उन्होने 1960 ई. तक संभाली । इस विश्वविद्यालयसे दो वर्षों की छूट्टी लेकर सन 1980 ई.तक हिन्दी साप्ताहिक "धर्मयुग" संपादक का कार्य संभाला ।

सन 1948 ई.में "लीडर प्रेस" से प्रकाशित "संगम" नामक साप्ताहिक में सह-संपादक के रूप में कार्य किया है ।

1:1:7 देश–विदेश यात्राएँ

भारतीजी को बचपनसे ही अज्ञात दिशाओंका परिभ्रमण करने का शौक था । सचमुच भारतीजी के सौभाग्य की यह बात है कि – उनका यह शौक पूरा हो जाता है । उन्हें अनेक देश विदेशोंकी यात्राओं पर जाने का अवसर मिला है ।

भारतीजी ने
भारत के अनेक स्थानोंका/ परिभ्रमण भारतीजीने किया है । उन्होने हिमालय को बार–बार देखा है । इन दिनों आए हुए अनुभवों का चित्रण उन्होने अपने संस्मरणात्मक निबांधों में लिखा है ।

सन 1961 में कॉमन वेल्थ रिलेशंस कमीटी के नियंत्रण पर पहले इग्लैड की तत्पश्चात युरोप की यात्रा करने को मिली । सन 1962 में पश्चिमी जर्मनी की सरकार के निमंत्रण पर जर्मनी गए । सन 1962 में भारतीय दूतावास के अतिथि के रुप में उन्हे इंडोनेशिया और थायलैंड की यात्राएँ करने का मौका मिला था । सन 1971 में मुक्तिवाहिनी के सहयोग से बंगला देश गुप्त यात्रा की । इसी साल दिसंबर में भारतीय स्थलसेना के सा भारत – पाकिस्तान युध्द के वास्तविक मोर्चे का रोमांचक अनुभव प्राप्त किया है । इसके दर्शन हमें "रिर्पातोज" मुक्तक्षेत्रे", युध्दक्षेत्र" नामक किताब में दिखायी देते है । सन 1974 में मारशिस जाकर उन जनता की समस्याओं का अध्ययन किया है । सन 1978 में जनता सरकारद्वारा उन्हे कम्युनिष्ट चीन जाने का मौका मिल गया था।

1:1:8 सम्मान एवं प्रतिष्ठा

भारतीजी का जन्म दिन एक क्रिसमस के पर्व पर होने के कारण उन्हे प्रतिष्ठा प्राप्त है । जब प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए, तब उन्हें "चिंतामणी घोष" पदक प्रदान किया जाता है ।

सन् 1950 ई. में उन्होने डॉ.धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में "सिध्द साहित्यपर" पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की । उन्होने हिन्दी साहित्य में अपनी मौलिक रचनाओंका खजाना पेश किया है । इस साहित्य की सेवा के लिए उन्हे स्न् 1967 में संगीत नाटक अकादमी के सदस्य के रुप में सन्मानित किया गया है ।

सन् 1972 ई. में भारत सरकार की ओर से भारतीजी को "पद्मश्री" के बहुमान से सन्मानित किया है । हिन्दी के रंगीन साप्ताहिक "धर्मयुग" का संपादक बनना गौरव की बात है । प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के अच्छे, आदर्श प्राध्यापक– भारतीजीही थे ।

भारतीजी ज्ञान उपासक, अभ्यासक थे इसलिए उन्हे अनेक पाश्चात्य देशोंका परिभ्रमण करने का मोका मिला । यह भी उनके सम्मान एवं प्रतिष्ठा की बात है ।

2. कृतित्व –

डॉ.भारतीजी एक सफल साहित्यकार हैं । भारतीजीनें अपने लेखनी का कमाल साहित्य की सभी विधाओमें दिखाया है । उन्होने कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, निबंध तथा पत्रकारिता में अपना कौशल्य दिखाया है । विधानुसार उनके कृतित्वपर प्रकाश डालना जरुरी है ।

2:1 कविताएँ

2:1:1 "ठंडा लोहा" (सन् 1952)

इस कविता संग्रह में 39 कविताएँ संग्रहित हैं । "ठंडा लोहा" की अधिकांश कविताएँ रोमांटीक स्वर की है । इस कविता संग्रह में कवि भारतीजीने ज्यादातर अपनी–नीजि आंतरिक पीडाओं का चित्रण किया है । इस संग्रह की सिर्फ 9 कविताओंमे जनवादी भुमिका दिखायी गयी है । यह एक "स्फुट कविताओंका संग्रह है ।"

2:1:2 "सांत गीत वर्ष" (सन 1959 ई)

इस कविता संग्रह में 59 कविताएँ संकलित की गयी है । यह प्रणय भावनासे प्रेरित होकर लिखी गयी है । जनता से सम्बन्धित अनेक कविताएँ इसमें है । इसमें ज्यादातर वियोग श्रृंगार का चित्रण करनेवाली अधिकांश कविता हमें देखने मिलती है । यह एक स्फुट कविताओंका संग्रह है ।

2:1:3 "कनुप्रिया"

यह एक "प्रबंन्ध कविता" का नमूना भारतीजीने हमारे सम्मुख पेश किया है । यह प्रबन्ध काव्य होते हुऐ भी इसमें केवल एकही पात्र है,

और वह है –राधा| उसने अनुपस्थित कृष्ण से अनेक प्रश्न किए हैं । "कनुप्रिया" शुध्द भावपरक कृति है ।

2:2: उपन्यास

2:2:1 "गुनाहों का देवता" | सन 1949 ई |

यह एक मौलिक उपन्यास है । इस उपन्यासमें चंदर–सुधा की रोमांटिक प्रेमकहानी चित्रीत की गयी है । "गुनाहों का देवता" की कथा एक दु:खांत प्रेमकथा है । यह उपन्यास पढते समय पाठक की उत्सुकता अंततक बनी रहती है । उपन्यास का अंतिम हिस्सा पढने पर पाठक आँसुओंसे भर जाता है । इसमें उपन्यास की नायिका–सुधा की मौत करके उपन्यासकारने दु:खांत वातावरण निर्माण किया है । यह उपन्यास कथ्य की दृष्टिसे सफल माना जाता है ।

2:2:2 "सूरज का सातवाँ घोडा" | सन 1952 ई. |

यह नयी शैली में लिखा गया, एक छोटासा उपन्यास है । यह उपन्यास भारतीजी के "गुनाहों का देवता" से विषय और शिल्प दोनो दृष्टियोंसे भिन्न है । यह एक शिल्प प्रधान उपन्यास है । इसमें माणिक मुल्लाने सात दोपहरो में बतायी गयी, कहानीयों का संग्रह है । इसमें छह कहानियाँ होते हुए भी देखने में एक कहानी लगती है । उपन्यास का नायक "माणिक मुल्ला" एक असफल प्रेमी के रुप में दिखाया गया है । यह एक मध्यमवर्ग जीवन का दर्पण है । इसमें जीवन के प्रति अडिग आस्था दिखायी देती है ।

2:2:3 "ग्यारह सपनोंका देश"

यह अनेक लेखकों द्वारा लिखा गया उपन्यास है । इसमें प्रत्येक लेखक का एक अध्याय और भारतीजी के दो अध्याय जोडे गये है । यह उपन्यास मानो दस लोगों का सपना है, जो सपना बनकर रह जाता है । पहले अध्याय में भारतीजीने पात्रों की नींव , स्वभाव सीमाएँ निर्धारित की है

भारती की नींव पर ही हर लेखक आगे बढे; ऐसा कोई बंधन नही है । उपन्यास विकसीत होनेपर इसका परिणाम यह हुआ कि "हर लेखक ने पात्रों को नचाया, कुदाया है । यह एक भारती का सहयोगी लेखन और अनुठा प्रयोग है ।

2:3 कहानियाँ

2:3:1 "चाँद और टूटे हुऐ लोग" – (सन् 1955 ई)

यह भारतीजी की प्रारंभिक कहानियाँ है । भारतीजी जाने–माने कहानीकार है । इन कहानीयोंमें निम्न एवं मध्य वर्ग का चित्रण किया गया है । इनमें समाज की अर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितीयों की आलोचना करते हुए लेखकने समाजपरिवर्तन की प्रेरणा दी है ।

यह संकलन तीन खण्डो में विभाजित है ।

1:1 चाँद और टूटे हुए लोग ।

1:2 भुखा ईश्वर ।

1:3 कलंकित उपासना ।

प्रस्तुत कहानियोंमें प्रेम के विविध रुपों का उद्‌घाटन किया गया है। इन कहानियों में सामान्यतः निम्न एवं मध्य वर्ग का चित्रण हुआ है ।

2:3:2 "बंद गलीका आखिरी मकान" (सन् 1969 ई.)

इस कहानी संग्रह में सन् 1950 से सन् 1969 तक पंद्रह वर्षो की चार कहानियाँ संकलित की गयी है । यह कहानियाँ भारतीजी की कलाप्रियता का नमूना है ।

2:1 **गुलकी बन्नो** –

गुलकी का चरित्र प्रकट करना इस कहानी का सर्वस्व है ।

2.2 **सावित्री नंबर दो –**

सती सावित्री की तरह इस कहानी की नायिका सावित्री इतनी पवित्र निष्ठामयी नहीं है । इसकी मृत्यु की प्रतिक्षा संबंधित लोग कर रहे है ।

2:3 **"यह मेरे लिए नही"**

इसमें नायक दीनू के जीवन में आया हुआ अकेलापन और उदासी का करुण चित्रण है ।

2:4 **"बंद गली का आखिरी मकान"**

गल्ली के कच्चे अंतिम मकान के समान नायक मुंशीजी की स्थिती दिखायी गयी है ।

2:4 नाटक

2:4:1 अंधायुग –

भारतीजी का एकमेव नाटक "अंधायुग" ने हिन्दी रंगमंचपर हचलच मचायी है । यह सन 1955 ई. में लिखा हुआ काव्यनाटक है । इस नाटक के स्थापना भाग में स्वयं भारतीजीने कहा है" – कथा ज्योतिकी है, अंधो के माध्यम से ।"[9] इस नाटक की कथा वर्तमान की है , लेकिन इसका आधार "अतीत" ले लिया है । "अंधायुग" के बारे में रामस्वरुप चतुर्वेदी कहते है – "अंधायुग" की गणना उन अत्यंत विरल और सशक्त कृतियों में की जा सकती है, जिनकी शक्ति और संवेदना एक ऐसे संपृक्त रुप में उभरती है, जहाँ भावपक्ष और कलापक्ष जैसे विभाजन ही कृत्रिम लगता है ।"[10]

इस नाटक का नायक– अश्वत्थामा है । इस अश्वत्थामा के चरित्र में प्रतिहिंसा और घृणा को बड़ी मनोवैज्ञानिकता के साथ चित्रित किया है । अंधकार का व्यक्तित्व "अश्वत्थामा" है, उसी प्रकार ज्योति जीवन का केंद्रीय चरित्र "कृष्ण" है ।

इसमें प्रमुख पात्र "अश्वत्थामा" के अतिरिक्त "युधिष्ठीर" भी नाटक में अपना प्रभाव छोड देता है । युधिष्ठिर इच्छीत फल प्राप्त होनेपर भी वह अपने को हारा हुआ समझता है ।

नाटक के स्त्री पात्रोमें – "गंधारी" प्रमुख पात्र है । वह जीवन के निराशापक्ष और अनास्था भावना की प्रतिमुर्ति है ।

"अंधायुग" एक दृश्यकाव्य है । "अंधायुग" एक सफल गीतिनाट्य भी माना जाता है । इसमें नाटकीय गतिशीलता एवं तीखा अन्तर्द्वन्द्व विद्यमान है । "अंधायुग" का उद्देश्य नये मूल्यबोध को प्रेक्षकों के मन में अंकुरित करना है ।

2:5 एकांकी – "नदी प्यासी थी"

इस एकांकी में पाँच एकांकियों को संकलित किया गया है ।

2:5:1 नदी प्यासी थी (सन् 1954 ई.)

यह भारतीजी का एकांकी संग्रह है । इस संग्रह की पहली एकांकी का शीर्षक "नदी प्यासी थी" है । असफल प्रेम की पीडा" इस एकांकीका – विषय है । यह एकांकी रेडियों के लिए लिखी गयी है । एकांकी का नायक राजेश की पीडा भारतीजी की अपनी पीड़ा है ।

2:5:2 नीली झील –

"नदी प्यासी थी" का दूसरा एकांकी है । इस एकांकी में नीली झील के देश की आदर्श व्यवस्था का चित्रण किया है । यह एकांकी सन 1950 से संबंधित है । इसमें प्रजातन्त्र की वर्तमान स्थितिपर व्यंग्य किया है ।

2:5:3 आवाज का नीलाम

यह एकांकी सन 1947 के बाद की एक विशिष्ट परीस्थितिपर प्रकाश डालता है । एक "दिवाकर" नामक ऐसे पत्रकार का चित्रण किया गया है । जिसने अपनी आत्मा की आवाज और नंगो–भूखी जनता की आवाज को पत्रकारिता का उद्देश्य बनाया है । अपने पत्र का नाम उसने "आवाज" रखा था ।

2:5:4 संगमरमर की एक रात

इसमें जहाँगीर और नूरजहाँ के प्रेम कहानी को विषय बनाया है । इस एकांकीमें दो दृश्य है । प्रथम दृश्य रात के पूर्वार्ध्द का है तथा दूसरा दृश्य रात के उत्तरार्ध का है पहले दृश्यों में बाँदी, – मेहर, बाँदी और लाड़ली, मेहर और लाड़ली, मेहर और जहाँगीर के संवाद है ।

इसीप्रकार दूसरे दृश्य में, मेहर और लाड़ली, मेहर और अंफगान, लाडली और परवेज, मेहर और जहाँगीर के संवाद हैं ।

2:5:2 सृष्टि का आखिरी आदमी

प्रस्तुत संकलन का यह अंतिम एकांकी है । यह रेडिओ के लिए लिखा जाने के कारण इसकी मन्चीयता का आधार ध्वन्यात्मकता है । इसमें प्रतिकोंका प्रयोग सुंदर किया गया है । इस एकांकीमें आशामय भविष्यपर आस्था दीख पडती है ।

2:6 निबंध/स्फुट ललित गद्य

भारती के तीन निबन्ध संकलन हैं । इनमें लेखक की वैचारिकता, संवेदनशीलता और चिंतनशीलता का दर्शन होता है ।

2:6:1 ढेलेपर हिमालय

इसका प्रथम संस्करण 1958 ई. में हुआ है । पहला पत्र– "फूलपाती" दूसरा पत्र – "लाल कनेर के फूल" और लालटेनवाली नांव और तिसरा पत्र का

शीर्षक है – "डेडसी के तटपर" । इसके प्रथम संस्करण में कुल सत्ताईस निबंध संकलित है । इसी निबंध संग्रह का तीसरा संस्करण 1976 में जो हुआ उसमें 5 रचनाएँ और जोड़ दी हैं । निबन्धोका विभाजन यात्रा विवरण, संस्मरण, व्यंग्य, रुपक, डायरी पत्र, शब्दचित्र, कैरीकेचर, श्रध्दांजली, आत्मव्यंग्य आदि उपशिर्षकोंमें समाया हुआ है । इन निबन्धों में लेखक की संवेदनशीलता दिखायी देती है ।

2:6:2 पश्यन्ती –

इसका प्रथम संस्करण 1969 ई .में हुआ है । इसमें 17 निबन्ध संकलित हैं । यह निबन्ध 1959 ई. से लेकर 1967 ई. के बिच के कालखण्ड लिखे हैं। इसके नीजि भाग के अंतर्गत एक पत्र है । इस पत्र में आत्मीयता पुर्ण संवाद दिखायी देता है । पश्यन्ती के लेख यथार्थवादी साथही समस्या प्रधान है । इन निबन्धोमें भावना और रोमांस का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है ।

2:6:3 कहनी अनकहनी –

इसका प्रथम संस्करण 1970 ई. में हुआ है । इसमें कुल मिलाकर 45 निबंध संकलित है । यह भारतीजी का "ललित निबन्ध" संग्रह है । यह निबन्ध विषयकी दृष्टिसे परीपुर्ण दिखायी देते है । इन निबंधोमें हास्य व्यंग्य के साथ, विनोद के प्रयोग सम्मिलित है । ये निबन्ध समस्या–प्रधान है । ये व्यक्तिगत, सामाजिक समस्याओंसे लेकर जागतिक समस्याओंसे संबधित है । इसमें भारतीजी का चिंतनशील रुप दिखायी देता है ।

2:7: रिर्पोताज

2:7:1 मुक्तक्षेत्रे : युध्दक्षेत्रे –

भारतीजी एक पत्रकार होने के नाते उन्होंने बांगलादेश सम्बन्धी लिखने के हेतू मूक्तक्षेत्र का दौरा किया है । भारतीजीने मुक्तक्षेत्र दौरा के साथ–साथ युध्दक्षेत्र

में जाकर आँखो देखा हाल अपने इन रिर्पोताज में अंकित किया है । इस मुक्तक्षेत्र, युध्दक्षेत्र में नौ रिर्पोताजोंके अतिरीक्त एक "इंटरव्य" भी है । यह मुलाकात मुक्त वाहिनी के कर्नल उस्मानी की है । इसकी रचना यात्रा संस्मरण के रुप में की गयी है । इसमें सन 1951 इ. में बांगलादेश एवं पाकिस्तान के बीच घटीत युध्द का वर्णन है ।

2:8 अनुदित कृतियाँ

भारतीजी की अनूदित कृतियाँ "आस्कर वाईल्ड की कहानियाँ" और "देशातंर" है । भारतीजी की अपनी अनुदित कृतियाँ हिन्दी में प्रशंसा पात्र है ।

2:8:1 आस्कर वाईल्ड की कहानियाँ

इस अनुदित कृति का प्रकाशन सन् 1959 ई .में हुआ है । इस अनुदित कृति में "आस्कर वाईल्ड" की आठ कहानियाँ सम्मिलित है । इस कहानिका मूल शीर्षक है – "हैपी प्रिन्स" ।

2:8:2 देशातंर (कविता संकलन)

इसका प्रकाशन सन् 1960 ई. मे हुआ है । इसमें "बीसवी" शती के कुल "एक सौ एकसठ" विदेशी कवियोंकी कविताओंका अनुवाद भारतीजीने किया है । इसमें विदेशी निम्न कवियों के कविताओंका अनुवाद है । अंग्रेजी कवियोंमें एजरा पौंऊंड, टी.एस.इलियट, ई.ई.कमिंग्ज, डी.एच.लॉरिंस, एलिजाबेथ जेनिंग, वालेस स्टीवेस, डब्ल्यू.एच.ऑडेन, रुपर्ट ब्रुक आदि कवियोंकी रचनाएँ इस "देशातंर" कविता संकलन में आयी है । भारतीने अपने अनुवादों को अनुवाद न कहकर हिन्दी छाया से कहा है ।"[11]

2:9 शोधकृतियाँ –

2:9:1 "सिध्द साहित्य" –

इस शोध प्रबन्ध का प्रकाशनकाल सन् 1955 ई. में हुआ है । भारतीजीने डॉ. धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में "सिध्द साहित्य" पर अपना पी.एच.डी. का शोधग्रंथ लिखा है । इस शोध प्रबन्ध का हिन्दी साहित्य में अनन्य साधारण महत्व है ।"सिध्द साहित्य" पर गहराई से मुल्यांकन करनेका सफल प्रयास सबसे पहले भारतीजीनेही किया है । "सिध्द साहित्य को भारतीजीने छः अध्यायों में वर्गीकृत किया है । इसमें भारतीजीने सिध्द सम्प्रदाय के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है ।

2:10 आलोचना

2:10:1 प्रगतिवाद : एक समीक्षा

इसका प्रकाशन काल सन् 1949 ई. में हुआ है । इस आल्लोच्च ग्रंथ में लेखक ने रुसी साहित्य के प्रति एक नयी आस्था रखी है । इसमें भारतीय प्रगतिवाद और रुसी प्रगतिवाद की तुलना करके उन्होने रुसी प्रगतिवाद के साहित्यिक मूल्यों की उँचाईयाँ प्रस्तुत की है । उन्होने रुसी साहित्य का अध्ययन, चिंतन, मनन किया है ।

2:10:2 मानवमुल्य और साहित्य

इसका प्रकाशन सन् 1960 ई. में हुआ है । यह भारती का आलोचना ग्रन्थ है । इसमें उन्होंने मानवमुल्यों का –हास और उनके अन्वेषण की दिशा को निर्धारित किया है । भारती व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को साहित्य की सार्थकता मानते हैं ।

2:11 पत्रकारिता

भारती के व्यक्तित्व में एक सफल पत्रकारिता का गुण विशेष रुपसे दिखायी देता है । उन्होने पत्रकार, सह.संपादक, संपादक के रुप कार्य किया है । अपने उत्कृष्ठ संपादक की अमिट छाप पाठकोंपर छोड़ दी है ।

2:11:1 संगम

अपने मित्र श्री.ओंकार शरद के साथ सह–संपादक का काम किया है । यह कार्य सन 1948 से लकर 1950 तक दो वर्ष किया है । उन्होंने "संगम" मे अनेक लेख प्रकाशित किए । प्रस्तुत लेख निम्नमुसार 'संगम' में प्रकाशित हुए हैं ।

1:1 नये युग के मसीहा :बापू ।

1:2 युरोप की आधुनिक चित्रकला ।

1:3 आधुनिक मनो विकार ग्रस्त चित्रकला ।

1:4 पुर्तगाली कविता में भारत ।

1:5 नरक राजधानी में ।

1:6 कॉग्रेस की कहानी ।

2:11:2 निकष

इसे धर्मवीर भारती और लक्ष्मीकांत वर्मा ने संपादित किया है । यह साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग द्वारा प्रकाशित हुआ है । यह हिन्दी के सर्व श्रेष्ठ नूतन लेखन का अर्ध्दवर्शिक संकलीत रुप है ।

2:11:3 धर्मयुग

यह एक बम्बई में सबसे बिक्री होनेवाला हिन्दी का रंगीन साप्ताहिक है । इसके संपादक का कार्य धर्मवीर भारतीजीने किया है । धर्मयुग के अन्तर्गत हर सप्ताह कहानियाँ, एकांकी, धारावाहिक, उपन्यास, कविताएँ, समुदाय के विषयों की जानकारी राशि–भविष्यपर सम्यक जानकारी प्रस्तुत होती है । लोकप्रिय उपन्यासकार शिवानी के उपन्यास "धर्मयुग" में धारावाहिक बनकर पाठक के सामने आते हैं ।

भारतीजीने "धर्मयुग" में सम्पादक के नाम के साथ, उसमें काम करनेवाले सहयोगी के नाम छापने की प्रथा शुरु की ।

भारतीजीने "निकष" एवं "धर्मयुग" के माध्यमसे अनेक नवलेखकों को प्रोत्साहित करने का कार्य किया है । हिन्दी साहित्य में भारतीजी एक आदर्श पत्रकार, संपादक है ।

2:12 निष्कर्ष

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी साहित्यमें डॉ. भारतीजी और उनके साहित्य का विशिष्ठ योगदान रहा है । उन्होने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा देने का कार्य किया है । जीवन की अनूभुतियों को अपने साहित्य में चित्रित करने में वे सफल रहे है । भारतीजी को हिन्दी संसार बहुमुखी प्रतिभा के रुपमें जानता है । उनके बचपन में ही माता–पिता का देहांत हुआ है । इससमय उनका जीवन दु:खमय था । है । इन कठीनाईयोंका उन्होने मुकाबला किया, क्योंकि उनमें कुछ सिखने की ललक थी । वे अपना व्यक्तित्व बनाने के लिए छोटी–मोटी नौकरीयाँ करते है ।

भारतीजी सीधे–सादे , सरल भावुक तथा संवेदनशील, महत्वकांक्षी व्यक्ति है । उनके व्यक्तित्व में स्पष्टता, ईमानदारी, और स्वाभिमान झलकता है । वे दिल से स्पष्टवादी, खुब पढ़नेवाले आस्थावान व्यवस्थाप्रिय व्यक्ति है । वे हंसमुख स्वभाव के जिन्दा दिल दोस्त है ।

भारतीजीने कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबन्ध, शोधसमीक्षा तथा सम्पादन कार्य आदि विधाओंमें लेखन किया है । इन विधाओंमें अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ दी है । वे मानवतावादी, समाजवादी, ईमानदार, रोमांटिक कलासंपन्न साहित्यिक है । वे एक मौलिक साहित्यकार होने से उन्हे भारत सरकारने "पद्मश्री" किताब बहाल किया है । वे ज्ञान उपासक और गूढ अभ्यासक है । वे एक स–हृदय आलोचक है । एक आदर्श उत्कृष्ट

पत्रकारीता का संगम उनके कृतित्व में दिखायी देता है । अपनी पत्रकारिता के माध्यमसे अनेक नवलेखकोंको प्रोत्साहन दिया है । उनके प्रति हिन्दी साहित्य के पाठकों की श्रध्दा है । अतः हिन्दी साहित्य जब तक रहेगा तब तक भारतीजी का नाम बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकारके रुप में अमर रहेगा ।

स न्द र्भ

1.	डॉ. धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 12 ।
2.	डॉ. पूष्पा वास्कर	डॉ. धर्मवीर भारती – व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पृ. 3 ।
3.	डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे	धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग	पृ. 2 ।
4.	वि. क. घाटे	डॉ. रामकुमार वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व	पृ. 10 ।
5.	सम्पा. अज्ञेय	दूसरा सप्तक	पृ. 175 ।
6.	डॉ. चन्द्रकांता वर्मा	डॉ. धर्मवीर भारतीकी गद्यकृतियोंका अनुशीलन	पृ. 3–4 ।
7.	डॉ. चन्द्रभान सोनवणे	धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग	पृ. 12 ।
8.	डॉ. धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 7 ।
9.	डॉ. धर्मवीर भारती	अंधायुग	पृ. 10 ।
10.	डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे	धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग	पृ. 81 ।
11.	डॉ. धर्मवीर भारती	देशातंर	पृ. 5 ।

0 0 0 0 0